

प्रो. ओबैद सिद्दिकी द्वारा दिया गया एन.सी.एल. स्थापना दिवस व्याख्यान

प्रो. ओबैद सिद्दिकी, एफ.आर.एस., भूतपूर्व निदेशक, टी.आई.एफ.आर. राष्ट्रीय जीवविज्ञान केन्द्र, बेंगलूर ने “फलमक्खी (ड्रोसोफिला मेलानोगास्टर) में घ्राण बोध” नामक विषय पर राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में एन.सी.एल. स्थापना दिवस व्याख्यान दिया । यह व्याख्यान एन.सी.एल. स्थापना दिवस समारोह के एक भाग के रूप में एन.सी.एल. अनुसंधान फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित किया गया था । राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला ने दि. 3 जनवरी, 05 को अपना 55 वाँ स्थापना दिवस मनाया ।

प्रो. सिद्दिकी आणविक जीवविज्ञान, व्यवहार आनुवंशिकी और तंत्रिका जीवविज्ञान के प्रतिष्ठित विद्वान हैं । गत चालीस वर्षों से अनुसंधान और अध्यापन कार्य में संलग्न प्रो. सिद्दिकी द्वारा समकालीन आणविक जीवविज्ञान एवं आनुवंशिकी के क्षेत्र में दिए गए योगदानों को पूरे विश्व में सराहा गया है । ड्रोसोफिला के रासायनिक बोध की तंत्रिका आनुवंशिकी पर प्रो. सिद्दिकी के अग्रणी कार्य से यह पता चला है कि फलमक्खी के मस्तिष्क में घ्राण सूचना का कूटलेखन कैसे किया जाता है ।

प्रो. सिद्दिकी ने अपने व्याख्यान में कहा कि “फलमक्खी में घ्राण क्षमता आंशिक रूप से जन्मजात है और आंशिक रूप से अर्जित की जाती है । फलमक्खी की घ्राण-क्षमता गन्ध के अनुभव से प्रभावित होती है । फलमक्खियाँ जिस गंध को ग्रहण करती हैं, उस गन्ध के प्रति उनमें आकर्षण पैदा हो जाता है और जिस गन्ध का उन्हें कोई अनुभव नहीं होता उसके प्रति उनमें अरुचि होती है ।” प्रो. सिद्दिकी ने अनेक अच्छे और सरल उदाहरणों के माध्यम से परिचित एवं अपरिचित गन्धों के प्रति मक्खियों की प्रतिक्रिया को प्रतिपादित किया । यद्यपि इस घ्राण-क्षमता हेतु जिम्मेदार जीनों को पहचानने के प्रयत्न किए जा रहे हैं, तथापि यह थोड़ा कठिन कार्य है क्योंकि घ्राण के साथ एक से अधिक अनेक जीनों का सम्बन्ध है ।

डॉ. शिवराम, निदेशक, एन.सी.एल. ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि “विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के संस्थानों का निर्माण एक दिन में नहीं होता है । प्रयोगशाला के स्थापना दिवस की स्मृति में हम उन लोगों को याद करते हैं जिन्होंने संस्थान का निर्माण किया है और उन सभी मार्गदर्शकों को श्रदांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने इस प्रयोगशाला को एक बेहतर कार्य-स्थल का रूप दिया है । प्रो. सिद्दिकी का परिचय देते हुए डॉ. शिवराम ने कहा “ प्रो. सिद्दिकी अत्यधिक प्रतिभा के धनी और विनम्र व्यक्ति हैं । वे सन् 1970 के प्रारंभ में ही देश में घ्राण-क्षमता के आणविक आधार के अध्ययन में पथप्रदर्शक बने ।

इस अवसर पर प्रो. सिद्दिकी ने डॉ. एस. राधाकृष्णन, वैज्ञानिक, बहुलक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी प्रभाग को वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार (मानेकजी एवं शिरीनबाई नेटेरवाला फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित), डॉ. एस. एस. तांबे, वैज्ञानिक, रासायनिक अभियांत्रिकी एवं प्रक्रिया विकास प्रभाग को वर्ष का वैज्ञानिक पुरस्कार

(डॉ. आर. ए. माशेलकर धर्मादा फंड द्वारा प्रायोजित), 2-एक्रीलैमिडो-2मेथिल-1 प्रोपेन सल्फोनिक अम्ल (एटीबीएस) बनाने हेतु रासायनिक अभियांत्रिकी और प्रक्रिया विकास प्रभाग के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी स्टाफ को वर्ष का प्रौद्योगिकी पुरस्कार (आई.सी.आई.सी.आई. लि. द्वारा प्रायोजित), वेनलाफैक्सीन के उत्पादन हेतु प्रक्रिया विकसित करने के लिए कार्बनिक रसायन प्रौद्योगिकी प्रभाग के डॉ. एस.पी. चव्हाण और दल को वर्ष की सर्वोत्तम प्रक्रिया विकसित करने हेतु सिपला हमीद पुरस्कार, बहुलक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी प्रभाग को चल शील्ड और ट्रॉफी के रूप में सर्वाधिक औद्योगिक आय पुरस्कार और निदेशक की सराहना का पुरस्कार और व्यक्तिगत श्रेष्ठता पुरस्कार प्रदान किए ।

एन.सी.एल. ने एटीबीएस प्रौद्योगिकी का व्यापारीकरण करने हेतु मेसर्स विनती ऑर्गेनिक्स लिमिटेड, मुम्बई को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया । इस कम्पनी के प्रबन्ध निदेशक, श्री विनोद सराफ ने प्रशस्ति पत्र स्वीकार करते हुए एन.सी.एल. प्रबन्धन और रासायनिक अभियांत्रिकी तथा प्रक्रिया विकास प्रभाग के वैज्ञानिकों तथा तकनीकी स्टाफ को सतत सहयोग देने हेतु धन्यवाद दिया । श्री सराफ ने इस अवसर पर कहा “ हम अनुभव से यह कह सकते हैं कि व्यावसायिक संयंत्र हेतु प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण दस्तावेज सौंपने मात्र से ही अनुसंधान संस्थान का कार्य समाप्त नहीं हो जाता है । एटीबीएस की माँग बढ़ रही है और इसका प्रयोग एक्रिलिक फाइबर जल शुद्धीकरण रसायनों, तेल क्षेत्र के रसायनों, पेन्ट, कोटिंग्स, ऐडेसिव एवं लैटेक्स हेतु इमल्सन बहुलकों के निर्माण हेतु किया जाता है । श्री सराफ ने सूचित किया कि विनती ऑर्गेनिक्स अपने उत्पाद का तुर्की, चीन, ईरान, मेक्सिको, बेलारूस, बुल्गारिया तथा इटली आदि विभिन्न देशों को निर्यात कर रहा है ।
